

जामें अति ही विमल अगाध ज्ञानपानी ।
 जहाँ नहीं संशयादि पंक की निशानी ॥१॥
 सप्तभंग जहँ तरंग उछलत सुखदानी ।
 संतचित मरालवृन्द रमैं नित्य ज्ञानी ॥२॥
 जाके अवगाहनतैं शुद्ध होय प्राणी ।
 'भागचन्द' निहचैँ घटमाहिं या प्रमानी ॥३॥

(१०)

धन्य-धन्य है घड़ी आज की, जिनधुनि श्रवणपरी ।
 तत्त्वप्रतीत भई अब मेरे, मिथ्यादृष्टि टरी ॥टेक॥
 जड़ तैं भिन्न लखी चिन्मूरत, चेतन स्वरस भरी ।
 अहंकार ममकार बुद्धि पुनि, पर में सब परिहरी ॥१॥
 पाप-पुण्य विधि बन्ध अवस्था, भासी अति दुःखभरी ।
 वीतराग-विज्ञानभावमय, परनति अति विस्तरी ॥२॥
 चाह दाह विनसी बरसी पुनि, समता मेघ झरी ।
 बाढ़ी प्रीति निराकुल पद सों, 'भागचन्द' हमरी ॥३॥

(११)

केवलि-कन्ये, वाङ्मय गंगे, जगदम्बे, अघ नाश हमारे ।
 सत्य-स्वरूपे, मंगलरूपे, मन-मन्दिर में तिष्ठ हमारे ॥टेक॥
 जम्बूस्वामी गौतम-गणधर, हुए सुधर्मा पुत्र तुम्हारे ।
 जगतैं स्वयं पार ह्वै करके, दे उपदेश बहुत जन तारे ॥१॥
 कुन्दकुन्द, अकलंकदेव अरु, विद्यानन्दि आदि मुनि सारे ।
 तव कुल-कुमुद चन्द्रमा ये शुभ, शिक्षामृत दे स्वर्ग सिधारे ॥२॥
 तूने उत्तम तत्त्व प्रकाशे, जग के भ्रम सब क्षय कर डारे ।
 तेरी ज्योति निरख लज्जावश, रवि-शशि छिपते नित्य विचारे ॥३॥